

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
नमो भगवते वासुदेवाय

ननाक २ स्नानमार्गसदापातुं केलीक कनमाज्जगता ॥
॥ नमामि शीवर्कसत्त्व कनमनु शीमलनी २
सकगुत्रवन्न (धप्रसाद दहि तत्त्व अनुलाव ॥ ८०० ॥
नागनाट ॥ नमामि शक्तिनधम्मका तु ध्ययह शी
हवन अनुल वधम्मका तुवागी ध्वनं ॥ क ॥
नमामि शक्तिनपंकजिननमास्तु २ दशरु मि द्वागी स

40

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

प्रसादिनः रुलिं गल उयका-काशा ॥ अहिनि सं स
 कयुवुवा न न-कुवा गल मुदिग्ध वरा व अलाव्य २ ऊल म
 मवलेर यव न्ध न मुदिग्ध लर य मा वृज्जुक्ति-य-य-स-का
 या ॥ ॐ ॥ मागलालिका ॥ म-मुरु व-कथमा वं काल म
 व वले वृप विविक्त कल सं २ उ-आ १ ६ काल वजा मृक म
 इ-क-सक सं स्वधित सना मृस यी ॥ ॐ ॥ चंडा मृगल स

७५

वाधिरुल शयकं सर्वजिन व्यापित-महज कल सं २ ऊल
 क मल-स्वधक मृप क वृना रु व सं सा वला सन-वि-व-क-
 वृप ॥ ॥ वरु पेल सान् मय गंधा वृस मृक सं स्व-ग-ध-
 क-प-व-पि-य-र-व-२ ह-काल मनु पुष्य अ-ध-व-रु सं स्व-पि-न-
 विपाक कल सं ॥ ॥ घन म-य-क-न-र-फ-वृ-प-रा-व-आ-क-
 क-म-नु-कि-नि-ऊ-ल-वृ-प-२-म-कि-नि-सा-वा-वे-न-इ-व-ना-व-क-

७२

ज्ञानसत्त्वमानियः रुद्रिजकलसः ॥ पाशादिआचम
 नदानपुंन्यसवं समयसत्त्वप्रव्यसितविसलकलसं
 २ महाबागडव्यरुयः बाधिविरुवृपः समयसत्त्वः ॥
 नमस्त्वेतुकिरुतः ॥ ॐ ॥ बागतीटः ॥ नकवचनजी
 ती वायनगुनुः लिज्जी द्वादशगुजप्रहलनहकिच
 नः ॥ कः ॥ उमदेवी वावुनी महामामकिदेवी २ जगत्

२ नकवचनजी

प्रभादिनमयनहसुबागधः ॥ आगमव्यदपुवा
 नवर्षानि २ यागधलमदि कां गुवुड पदगधः ॥
 पकवृद्धस्वन्नृपदधुमः २ सयाजकागीनीनामहवृज
 वृद्धहवृजः ॥ ॥ सकगुवृवलतसिबगरुधजीया २ रुध
 योतीवार्कवर्जस्वन्नृपः ॥ ॐ ॥ बागरीलवी ॥ नमः
 हं कायुननृपधनृ २ स्वदुविसलउद्राधनृ ॥ कः ॥ नना

२ नकवचनजी

॥ क॥ वाह॥ न॥

931

179

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सदादिनिदयः सहजा भानन्द सवतिधवाश्चत्तमामिः
 श्रीचक्रसप्तः सतयुवचक्रधाराधिका ॥ ३३ ॥
 १ वागदभूरति ॥ हाडा आरुवाता ॥ कोयायीनसम्बन्धन
 यीकवाविउमसाश्चकवालेकमहिष्यामृगान्त्यमकुल
 कगादिमन्त्रजः ॥ ३४ ॥ नवममोक्षसत्त्वववायाः सप्तममं
 दरीभात्रकायः ॥ सतिवाहनिः चक्रवा नाहि ॥ ३५ ॥

[illegible]

२०१॥

नवर्जवागहि ॥ ३ ॥ नागकर्षि ॥ धिहंदावापसी
आगिनीदहकवा नी २ कमलकवी सद्यं धृ कन ह विद्याने
॥ क ॥ आगिनी दुःख विप्लव न ह न कि आयी ॥ आवा मूहव
विद्यात्मकमलमदिवयी ॥ ॥ उपद्रुथागिनी न पनजा
यी २ मलि कनवहिया न आदिथानसमान ॥ ॥ सा स
नघानकवी यान २ न ह पु र्य इति पकनरु न डा ॥ ॥

[illegible]

नीनारजअधुअकानगकिसहस्रमध॥ ॥रुलहस
लहहमरुमनससुडा२गीउवतनाथ०एकसस्ववाया
॥ ॥रवागनाटा॥सकनकगक०हुनूसम्वनविना२अ
नूपसकनूनासस्व०नसविना॥ ॥क॥सस्वनरकनूमयी
भाकरविविधिकल्पविनासनीनूडा॥ ॥इविवावाहिउ
प्रमाधुनदस२रुदरुयहलनविसानविमरवा॥ ॥

42

१॥ सर्वाङ्गानां ॥

सकलविघ्नहन्ति. मणिजगन्निबुद्धा. २ नष्टिपमिसर्गनिवा
 सनबुद्धा. ॥ रावाणवक्रयाहन्तिबुद्धा. २ अक्षुपमसुप
 लसमय. सुखधिरु. ॥ ३३॥ १ जागधनायी. ॥ सर्वाका
 नामहासुखकर्म. न उज्जानन्ददहा. २ विरुधनरुन
 यि. महासुखनाया. चन्द्रमुख्ये इयीमत्रिया. ॥ ४॥
 अपामत्रिनालपूजिना. श्रीरुधनयकध्वनुर्यानी. २ सर्व

九

30

34

२ वरुणाग्निनी ॥

32

वर्जक वाट कहा थ्य विध विद्या कश्चि भक्ती याउ वदां गी २
संयुट योगिनी के सन विहा गुंगन महासूर्य म नी प्रसादा
॥ वरु वा नाहि आ लि र्जित सखन ना वस्यि वृद्ध विविह
नरंग १ वा धुनी कनयी यक्ति दनि ह वृश अर्ध सुन न
ल न प्रसादा ॥ सहक सहर्हि नरियि यागा वर्जक क
न श्री ह नृ उा वन न प्रसादा १ प्रसादा जी जी न की दनि

२ अवनिनिदिगान्

हनुव विनासया सन्यक वृत्ता ॥ ॐ ॥ १ नागका माउम
अर्वनि निहिता ज्ञान नील समद हा श क क य पी नु य न रि
ख म ब द र्नी ॥ ५ ॥ क ना ह ह ना ह ह २ ह ह ह ह ह ह ह जा
र अ च ल क्षा रु या या ॥ ॥ नि वि धि क घ न इ ति बं क रु ह
हा २ पा गे ख र्क्ष क्षी जी रु व न ना थ ॥ ॥ ह नी ह व पुं ऋ ०
द च उ मा ना २ मा न वि घ्न इ ति स फ़ रु य ह व ना ॥ ॥ वि वि

20

१ अवनितो हि नवान

धिरुजलमोनालैककदहा२ऊगकवांशुगवव.रुलदा
यकं॥ ॐ ॥ १बागकासांउ॥ अवनिनीहिरुवासजा
नू.खमैकिजनमावसंप्रासा२बागदखसाह.वंधिउप
सा.शीशुवननाया.अवनविना॥ ॐ ॥ लमामिपीन
धुमहावाखना.ऊगमुय.रयऊहिगा२द्विखनाथवि
श्वयापिक.विर्वदिकर्म.महाकादनाया॥ ॐ ॥ अतिरि

खनाग. उर्ध्वप्रचन्दा. दृष्टाकनालविन्दुमिकिन्नता २
 पीण्डिकमूर्धना. ककवनयना. वेलीसंग्रामा. नाखह
 हयना ॥ माधवमाया. पूर्वद्वन्द्वम्. नोदपीसावा
 दि. पादवरनमः २ समनसमाया. नागविमाहा. ह्यनना
 या. ममाहिकहहा ॥ नलोहनमपकलातमोत्रि-
 कयूननोपून. नूनमूनकावा २ सननन नागदि. वदि

३७

गपासा. नायसोमखल. अवनविनी ॥ २ नागवसम
 अगसिकसमइनिहह. हप्रलाखवा २ विविधिनलम
 तिमकूटविरुषिता ॥ ३ नाचयीन श्री अचलवीना २
 ननाचउआनह. विनासयीअचवा ॥ ४ धामउहव
 विंडमडाहर्गना २ प्रकाशाबीर्जन. अदयमहासर्व
 ॥ ५ विनागवन्दुयुनि. रुवरयंकना २ कस्यनिहक. घ

३६

२ अगसिक ॥

२३ श्री वाकुली

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ मा वन नु न दय्य न निव वि धु ह न ॥
य वि स हि रु ग न क ग ग वि वा स यी अ न वा ॥ ॐ ३ ॥
१ वा ग पं थ म ॥ क र्यं वा द्यु लि ह नु उ द ल गि स यं न क
वा स व रु ग क उ धी नी ॥ ॐ ॥ म ह र ग व न पा उ र स म
प म हि म द्यु ल नो उ य व व न म न का वा ॥ हा उ रु म ल
आ रु ल न वि रु पि क म खे ल र्घ्यं उ वा ला र पि नि धी नी धि

३६

२३ श्री २ रुय

न यं जी र्ण नि न य ना ॥ क र्ण नि ख र्ण व ग्री व नू ड न न
मि ल मा ना २ कं शि य धां ग व न म क ट क ग ॥ मि व स
मिं धू व क जी ल र्ण वा २ क रु वी क पु ल ना म्बु व स र व मा व
॥ ॥ रु न यि लु ले क व र्ण वा वु नी हा मा २ श्री व र्ण र वी प्र
सा ह श्री ह व र्ण पा या ॥ ॐ ३ ॥ ना ग रु ल वी ॥ क र्यं २ वा
द्यु लि स यं न सा मा ल क न २ अ व य श र व र्ण ना व नी ॥

३७

॥ ऊ॥ नूनं नूनं नूनं हा हं हं ॥ कालनाचयि-माननि
 नवानुनी ॥ ॥ किमपदेयानि बहहापूवर्क ॥ शिन्नऊ
 ननीहवी-वर्कयोगिनी ॥ ॥ ऊ॥ २ हं ॥ आरुनम
 साता २ कवठिकयावखवागधवी ॥ ॥ ऊ॥ २ नोडस
 मगभनसि २ गीव्यनोडननसिलमाला ॥ ॥ ऊ॥ २ न
 खह-ऊगकसमा २ प्रलमामि जूदयसंवाहुनि ॥ ॥ ॥ ॥

३५

॥ नागविलास ॥ उदिताकवयीया-पवननइता २ वनंसहस
 मककासर्वकगा ॥ ॥ ऊ॥ ॥ शालइसुवरुवधिसंरुनीता २
 अखयनिलेऊनभाऊसर्वकगा ॥ ॥ दिनकत्रमलुल
 मवगगा २ देवा २ शुवननसिलनमिता ॥ ॥ हं ॥ आ
 लिमीरुय-प्रगितिहका २ कवूना मृकनगस्यवर्वकगा
 ॥ ॥ गावदिपवननपनिशुवृगका २ वर्कवावाहिदुके

५०

२ उदिता ॥

विष्णु भक्ति

२६४३०७८९०

सिलनमिगा ॥ ॐ ॥ १ नागविगाह ॥ धिरु कृत्तक मूव
वकवर्ध ॥ २ नगनमकृटक मतिनिवाचना ॥ ॐ ॥ नमो
हवी वृधजकिनि विस्वजननि ॥ ३ शोरुवन व्यापीक-जी
मस्तानदायति ॥ ४ इहिनकनवक-विनासिनक-ह
म्वति ॥ ५ वामक बाटक-चतुलमाधमपिवयी ॥ ६
कननिमधुलमाधम ॥ ७ अदिया नगमन्य ॥ ८ वलनापृव

२७१३०७८९०

वलगीक कंप्रव्यसिगा ॥ १ श्रीविशाधनी देवी-सुवन
नमहिगा ॥ २ सकनमधिसिद्धिहोममागा ॥ ॐ ॥
३ नाग-जन्धलवी ॥ ४ शुरुदनका निगमनूति-मनूया
मनू-वितयवर्ति ॥ ५ ॥ नाचयीनक-सर्वपत्रम-स्वव
जवर्ति ॥ ६ ॥ वलिसहसुकिननह-भुयसहसुवर्ति
॥ ७ ॥ वेहविहननूपववीक्षमि-अनूनायनसुवर्ति ॥ ८ ॥

२४

ॐ

२० निनायन

२ वाग अंवाहेलवी ॥ निनायन-वउवंकविहावा २
कनइप्रतिष्ठ नयुलहाम ॥ ॐ ॥ हामहामकनयिया
हं हं नहिउमावा २ वागदखमाहवन्निवशुदिन ॥
॥ पुलाव ८ उपायाववजा २ ववीससिवापयी
आश्यावेयीया ॥ ॥ वामदहिनभुलवहिपाया २
कनयिवजानव आहगिदिता ॥ ॥ कर्तुवाल्लय

॥ ३

२० निनायन

अयनलहाम २ वायुसहावदियसंवाध ॥ ॐ ॥
२ वागपुंकरम ॥ कलिकवजानन-लविससिकुचिकुजा
वयीअंकालनादवृषी २ कइवृजागधिरुवनविना
: पयिसयीजीनससि-विन्दुवृष ॥ ॐ ॥ पत्रमाआन
मयुनिवृषधवि-आधधियओमशैवजा ॥ ॥ कवीस
कमवसंजागध-सहजाआनद-पवनकनगसविनग

॥ ३

ति २ प्रयमुख. खटखट. जलमकटधनी. ककुसिगा
 ननदहिनवाम ॥ ॥ ॐ नमस्तुलपलिवर्ज पञ्चकल.
 कंकमवृत्तगतप्रकाशिता २ वर्जखजसवदहिनकन
 धनी. वामधर्मपत्रवापधनी ॥ ॥ वीचिप्रवलाहव
 न. विरुषिता. रुलायिभूत कसूयुक्तिधना २ सगरुव
 चनन. कमलप्रसाह. नमामिपमनिवापई ॥ ॐ ॥

४४

२ कोलायि ॥

१ जागभादि ॥ कवायीप्रथियावा नाममनिप्रकलका
 २ घनकपिथिहायी. वजयीकनूरुतक्रियायितलो मा
 ॥ क ॥ मलयजं कनूरुवजयी. उंतिमागानहिवर्ज
 यी ॥ ॥ कहिरावूरुवजयी. मयमापिवयिनया
 यी २ हालकालेऊनपनयायी. इडनूरुहिवजिअ ॥
 ॥ ॥ चउसमककुलिसिहा. कसूवनाउनयायि २

४५

२ विषय ॥

[illegible]

सत्त्वल. विस्ववृषं २ पथिपडमसंजां गध. संरुवनिश्च ना
सह ऊ आ च नमय. स्तानवृषं ॥ ॥ वरुपय्यकगर
कंकमावृनरुननामसंगिकि अऊयध्वनं २ ऊगक ३४
खनामन. वाधिरुलदायक. आगगत्सस्वविकावनीना
॥ ॥ गुवृवाकदृष्ट विद्या. अई पवनक विद्या. म
निमकृष्ट वेदा नीउगादि विनीया २ च उवक्रपा द्रष्ट

२ वन्द्यमसान

जीनयवमस्वनी-सूर्यरुवनस्वनिवावाहरुवन॥ ॥
स्वप्नमायासहसरावपनीरावता-वृद्धधर्महृद्यसज
नागकिर्यं २ शुभ्रवज नसि र्यधवीया-गभवन्तिस्वव
वर्जजस्मजस्मसा नूवृद्धसजननी॥ ॐ ॥ वागहलवी
चन्द्रधमसान-सिलसहका-वासकिनाग-गर्ज
रमघा २ ग कल गमगन-अस्वकहका-घनीरम

५६

घा-रुक्कनाग॥ ॐ ॥ वृद्धजमजलजकसकन
वंकिवायुनाकस-दिगीविदिगीवनिहवस्ति-ले २ अ
समसान-कुपीसंविर्लविलस्वल नावयिसह
जानत॥ ॥ क कनिघावा-वर्हिकमघा-काली
कवा-कठकाटकनाग २ कर्नकरेलवा-बहुक
मघा-सलसजनाग-चूटकहका॥ ॥ अदगहा

५८

٥٢

नयी कर्षणान्. माखरु सवना. कात्री नाशनी प. वा
 पयिवदना ॥ ॐ ॥ ॥ रत्नागङ्गा गङ्गा लवी ॥ धूम्रगङ्गा
 नि. चन्द्रकलम् ॥ शिखरपिङ्गलकगवयम् ॥ ॐ ॥
 रत्नागङ्गा लवी ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 महावनी पूजा ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 २ वाहलि वीरुल. चन्द्रकलम् ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥

٤٥

ॐ नमो भगवते
विष्णवे

नंकच्छुगवलिगमगाः २ पृष्ठिंकं नंकैसमाकूलवय
न॥ ॥ नीडमहावनीपीरुवत्रगयन२ मयमांस
मत्स्यवृधिनः साहान॥ ॥ ॥ नागग्वदशी॥ वा म
खत्येनैधनः दहिनैककिं २ पोयलनोपूलमधुनव
गिलमाला॥ ॥ ॥ दविनाचयिः पुकाजठिबर्जजया
गिनी२प्रितिनः उदवीः श्रीशुवनपयिम॥ ॥ कानम

२ वाचादि अक्षि

श्यद्विपि. पारंगतवंधिनं २ नागदक्ष माहकारि ननुद
 ॥ ॥ कृतममद्वी. श्रीरुवतदवि २ भूतं पादद्वि
 भुन्यन्तासां ॥ ॥ शुद्धिर्महालनाया. कवूनकनाया
 २ माकृमागद्वि. भविरुद्वी ॥ ॥ नागमादि ॥ वा
 बाहिव्यस्त्रि. प्रदवमना. दिनकलमधुलमध्वस्त्रि
 मा २ नकधमादया. वापियाताद्वि. सकृत्कगदिगं

स्वना॥ क॥ प्रसमानि वासुलि॥ श्रीवज्रयागिनी॥ अ
 नुरुत्तवाधिप्रदायति॥ ॥ विरुत्तकमख॥ श्रीनी
 लावता॥ लाहिरवर्षप्रदालिनाशप्रवृत्तव्यापिनि॥
 दाहिनकल्पादिधनी॥ मूर्ध्निपूर्वाककपालधनी॥ ॥ ५६४
 चक्रोर्ध्वलकलिधनी॥ हाथा लावकविरुधिसि २
 वजनं नो पूजदहिना कलिं यमखना॥ नवसिलमा

नमो भगवते
 श्रीगणेशाय नमः

गविरुधिता॥ ॥ विरुत्तकमख॥ पलमयमखनि
 रुवयरुयतावनिदीनभवेवीरसहजानन्दस्वपि
 निदवी॥ अधिसिद्धिबनप्रसादायनी॥ ॥ ५६५ ॥
 गगनगजावलि॥ हकालसंज्ञा॥ युक्तादहारद्विदुज
 एकास्पदित्तये॥ क॥ कलाहसंज्ञाह॥ ॥ चक्रि
 कृदुलकलिमासा॥ अचक्रकयमयं सारु॥ ॥

५६५

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अहं नाना अहं प्राणकाले

अथ नाद
वर्गशास्त्रिनः

乙巳

विवाहान्नसलनरा  रा रागः श्रीमहात्मि ५५

٤٦

21

शक्तिवत्तननि
शक्तिवत्तननि

कितवत्तनयति उव. नशी कां पा क ल. निर्वसय
निर्मवमति ता २ न पालन म धु ल मा म्भ. गगि ह क की
ल ल. रुग क म धु ल मा म्भ मति ना ॥ ५ ॥ शिजा गति ग
रि शा न. अ व ता ल या ल द व प्र न मा नि वृ ग म न ली
क श्व ल द व २ सि धा या गिति. व न्धू द रु पा नि क म या
उ व प नि वृ ग म ति न ल नु द व ॥ ॥ ना धि क म ल व

६८

वि वृ प्र का सि रु. वा धि या न वा म क म व ध ल हा ॥ ५ ॥ २ ॥
मृ त्म म न रु. वा ग क रु. दा नि ड इः ख रु य ह ले ना ॥ ॥
इ ह रु ग वा कि. का या रु ग ति. न मा मि श्री वृ ग म व ला
क श्व न द व २ न मा मि २ श्री लि न न नु द व. स्व र्ग म
ध. पा ना न द व ॥ ॥ द ग रु मि दा धि ग रु ल रु न व
श्री या. रु ग रु मा थ अ रु य दा ना २ श्री मृ मि ना रु व सि

॥

५८

१ मधुलिपुः॥

यंगरुधलिया-शीलाकस्वलसलनागनिर्य॥ २॥
स्वागवाउसिकावतन॥ मधुनीपृथीपृलाइयनिश
बाला २मकलरवगन-वदिरुचनन॥ ३॥ मधु
आदिवृचपीमंशकूमाला २त्वमृविबंधामिपमन
स्यस्वला॥ ४॥ कूममृचिमासुनचिनदृषमा २ शुभ
गमिचकचूनविहारा॥ ५॥ विखयविषमवृदपा

७०

१ मधुलिपुः॥

नंगमनस्य २विस्ववियापित-शीवंगुनुस्वयीरु॥ १॥
२॥ मरुगुनुपत्रमादिविंदमाभाध्व २ गओति
रुवगिरु-पुनओकालिमा॥ ३॥ वागमलाल ४॥
पुनवदननलमकट आनकैना २चउउउखज
पृष्ठकमनधनधालि॥ ५॥ नमानि मरुशीपन
नममना २मयलआसापविपूजित उधानिमा

७१

२ सुभंदका ३

॥ दहिने श्रीगणपति. वामे श्रीमार्हा दान २
सगल मधुल माय. प्रकृति ना मिता ॥ ॥ गृहि स
रात्र वाया. विस्व सापिका २ अष्ट राय व इया धि इ
विकरुल नम ॥ ॥ वरुध व प्रसादि न दास रुत थिया
२ शुच वल न मा वृति धि व न प्रसादा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ वाग का मा उ ॥ सुरे गंध धा उपलि सौ मि न नं नं. वृ

६३

धंग्री म डां किक. शुच वर्ध २ श्रीवृध ज क ग मि मधुन
हं. नं का व स जा र. प्रन मा मि सा नं ॥ ॥ अरु वृधु भुय
पलि सौ मि क रं रं. न लां क म डा किक. पीर व र्ध २ श्री
वल्त श क व वि मं ल हं. नं काल स जा र. प्रन मा मि
ग म ॥ ॥ मयू न म डा प वि सौ मि क रं रं. प म्ना क म डा
कि न व क व र्ध २ श्री प म्ना श क व वि मं ल हं. यं का न

६३

10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525
 526
 527
 528
 529
 530
 531
 532

नमः
 सै शाक प्रवसा मिसा नमः ॥ ॥ स्व रज्यं वरग का पयि नमः
 सि नमः कृ पान मूडा कि क म द वारु २ श्री वि न्व ज क
 ला वि म धु ल सै मं का न सै शाक प्रवसा मिसा नमः ॥ ॥
 वं नमः द वि धा पयि नमः सि नमः ई शा नि मू डा कि क नि
 न व र्ण २ श्री व र्ज ज क ग म म धु ल नै नै मं का ल सै शा
 क प्रवसा मिसा नमः ॥ ॥ ॥ ना ग र ल वी ॥ भू द क द

ब्रह्म नदि गंधि दि गंध वन. ध्वनि नमालु च युल न
 गंध २ गगल सखल गगल भूत कौ मल काला. गगल
 उम ब्रह्म वा दियाल ॥ ५ ॥ ह ह ह नमामि पक्ष
 किनि. पक्ष ३ गगल दि भूत अकीना. सल न रुग्ध रु
 ग्वला ॥ ॥ पृष्ठ उरु न पक्षि मरु डि न वरु वन
 विष्टु मा न विष्टु रं दियान ३ अकिनि दी पिनि च उ

सिक बा ऊ न घाल व्यगा ल स ग्रा स व द न ॥ ॥
मिं घालि. व्यां घाली रु म्ब क र लं कि नि ख बा ग प ल भु
मं क स र मा र व रं ग कि नी घाल व्य गा व ग कि नि.
व न्या ल ग कि नि च तु ल द वि ॥ ॥ कि न ऊ ल नि द
वि ग कि नि रु रू पा य स व न. पं च मू दार ल न वि
धि गा र ख रू रु क क व ज घं रू. ख बां क पा प्र ल म

५६

विरुखिगाः आलिकालिङ्गिआलिध वापवि. व्याघ्र
चर्मनिर्वागन कृष्णकनः॥ नवसिलसा वा आल
स्वलीसंस्वना. दिव्यचक्राणि निकवृत्तदृष्ट्या २ रुक्मक
न्ममावृत्तं रुपायनसलना. ममादि यत्र मोदिवर्जगीता
॥ २०५ ॥ एवमश्वदश्या ॥ देवीनिसलव नविनासयिक
यिस्य ३ उथरुमादिसलनाया ॥ ५५ ॥ रुद्रकावहसन

॥ अगस्त्यनिषीदित्याज ॥ ॥ अमियश्चिल्लेज्जदहस्य ॥ ॥
 ॥ अथुद्विष्याजिनह्नपयिस्व ॥ ॥ ॥ उचउआगिनी ॥ ॥
 ॥ लभनाश्चर्जवाभाहि आलिर्गैधकाल ॥ ॥ ॥ उथरना ॥ ॥
 ॥ दकयूनकवादिश्चर्यैर्जय आलिर्गैधलिलवर्धुवाल ॥ ॥
 ॥ ॥ ॥

सर्वदिशयासिन्नक

॥ आवा ॥ सर्वनाथागतामार्गः सर्वनाथागताव
यः सर्वधर्मागमस्तान्माह गमयन्तु मरु म ॥ १ ॥
॥ इति ॥ सर्ववक्त्रासं पूर्णः सर्ववक्त्रावर्तिनः समन्त
रुद्रकाग्रः प्रः सारवमधुलमरु म ॥ २ ॥ यच्छि ॥
॥ मन्धर्माग्रमरुतः स्तानवर्णाविश्वधर्कः समन्तरुद्र
वावाग्रः सारवमधुलमरु म ॥ ३ ॥ उरु ॥ सर्वमत्त्व

८८

सर्व

महाविरुः शुद्धप्रहरी निर्मलः समन्तरुद्रविश्रायः
शेषमधुलमालयि ॥ ४ ॥ १ सर्ववक्त्रासं सर्ववक्त्रावर्तिनः
वधुपनः सर्वतन्नादिनाः पित्वा सर्वविकल्पभाहकः
आकिनिहन्कादिनाः ऊहवर्कः पवित्ररुद्रः जिनः गुनः स्त
नाः धामाकः रुद्रः यस्याः रुद्राः रुद्राः इव रुद्रस्य समन्ताः नि
रूपसं सह व ॥ १ ॥ नित्यनाकमपुथरुः सिल्लि

८९

प्रभादि कया सिद्ध

कच इरु. अंवकी लं इमा ल्यद मोलि. वरुजालि व्यय पाति
पनि घक सिखलं. अषमालि दुमो लि. वावा सा भृष्टिकं
१७. घन निव कलि का. नाग च भो कली य. पा या क श्री स म्ब
वा रु शा रु व न वि रु यि. अकि नि ह नृ का दि ना. ऊ रु च
कं प नि व रु क. जि न. गु न. स्त न. इ यो भा रु ह य न. य स्या
क स्य. क या तु ल ह स्य म न रा नि ल्य प्र स स ह रु व ह १ ॥

२०

एडा रु ल न ग्रा सि न

च रु ल लि. क व लि न या नि द प दा इ ला लि का वि स वा. वि स
वा धि म रु स रु व दि न च य. लि न स वा. धो धा या. अ स्वा का य
ना पि नि वं नि प वं. प्रा फा य वि ध फे ल या. ला ग म दा ग चि रु व
य. स ह जा य न द्या य. व द्या म ह १ ॥

२१

ॐ

विष्णुसूक्तम्

१ नागं गुंभीरमावधी ॥ विरुज्जु कसूखत्रकवर्धनी
नया २ मकुटकसद्विगुम्वना ॥ ॐ ॥ ननाहं हं १ नना
हं हं २ ननाहं हं हं ॥ ॥ वामकनाटकद्विहिनक
नटि २ हाडारननसमाहिता ॥ ॥ सूर्यमधुल
माभमावद्वमवृत्ति २ वर्जमंथिरुविरुविता ॥ ॥
सगुनवृत्तनसिन्धुगन्धना २ वर्जवानाहि दुःखाय सवना ॥

७२

नमामि २ शानति

१ नागलेखनी ॥ नमामि २ श्रीहानतिमहाजकुनिद्वी २
पंकपुष्पनिधाननिद्वी ॥ ॐ ॥ नमामि २ पद्मनि-
सामकिद्वी ॥ जगन्मंथालपनिपानिना २ जन्म २ अधि-
सिधि ॥ माकुमुकिप्रसादा ॥ ननाहं हं ननाहं हं ॥ ॥
नमामि २ श्रीसूर्यधनद्वी ॥ जगत्प्रसादिता २ द्वादशवर्ष
पुष्पणी विधानीगा ॥ ॥ नमामि २ श्रीवृजानामहि ॥

७३

नमो भगवते वासुदेवाय

निद्वी २ धर्मक्षुपनिवा नीरुत्तुययान्ति ॥ १ ॥
नमामि २ श्रीमश्वरुर्गनीरुत्तुययान्ति २ प्रनमामि श्रीप
इमनिद्वी. नद्विसिद्धिद्विभवा २ ॥ गगनलवी ॥
नमामि २ श्रीमश्वरुर्गनीरुत्तुययान्ति २ प्रनमामि श्रीप
वा २ यकवृद्धात्मकयवकुपप्रनित्ययनमंश्वज
॥ ५ ॥ गनोहं गनोहं गनोहं गनोहं सकनविशधिपक

नृनामयमृगिस्तनप्रधानसहिगा॥ नमामि
मिश्रवागीश्वरेणवाणवनहिमवस्तुतना २ गंध
त्रिंशत्तमद्वयउक्तनवजयस्तु कमाने ॥ ॥
नमामि २ मंरु कमाना मृडाखर्ग उखितल्लहना २
नाता नल उखितदहा नकु विक्षिप्त मृग मुध नान
॥ ॥ नमामि २ शिखुवनल्लन सर्वमाकार्यका